ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 427-430
www.allresearchjournal.com
Received: 11-12-2022
Accepted: 20-01-2023

रौशन कुमार झा
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० डी०के० शर्मा
प्राचार्य, एम.बी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन अनारकोठी, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार झा
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

बी.एड. कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रौशन कुमार झा, डॉ० डी०के० शर्मा

सारांश :
समायोजन की क्षमता किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिस्थितियों के साथ अनुकूलन को कहते हैं। जो व्यक्तिगत योग्यता पर निर्भर करती है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि इसी क्षमता की एक पहलू है। हमारे संस्थानों के द्वारा दी गई शिक्षा हमें परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन एवं स्वयं को उसी परिस्थित में रखकर लक्ष्यों की प्राप्ति में अहम भूमिका निभाती है। शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अन्तर को देखा गया है तथा साथ ही दोनों चरों की बीच सहसम्बन्ध को देखा गया। परिणाम स्वरूप यह प्राप्त हुआ कि दोनों में कोई अन्तर नहीं है। क्योंकि छात्र एवं छात्राओं दोनों को समान प्रयोग किया गया। जिसके कारण दोनों वर्गों का आत्म विश्वास उच्च स्तर का पाया गया। अच्छी शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के लिए अच्छा वातावरण का होना आवश्यक है। लिंगभेद के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में कोई खास अन्तर होगा। समाज में माता-पिता का भी बालक एवं बालिकाओं के सन्दर्भ में दृष्टिकोण बदल रहा है। तमाम आंकड़ों से यही निष्कर्ष मिलता है कि वर्तमान में कोई भी वर्ग किसी से शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में कम है। माता-पिता अपने बालक एवं बालिकाओं दोनों को समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अवसर देना चाहते है। विभिन्न कौशलों एवं तकनीकी ज्ञान को अपने बच्चों में विकसित करना चाहते है। जिसका कारण है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में अन्तर समाप्त हो रहा है।

कूटशब्द : व्यक्तिगत योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता

प्रस्तावना

बी.एड. कक्षा विद्यार्थियों के लिए एक उत्कृष्ट पाठ्यक्रम होता है जो उन्हें शिक्षक बनाने के लिए तैयार करता है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत, छात्रों को शिक्षा से संबंधित विभिन्न विषयों का अध्ययन करने के अलावा, उन्हें शिक्षण-अभिरुचि, शिक्षण तकनीकें, शिक्षा मंच और संचार कौशल जैसी कौशलों का भी संवर्धन किया जाता है। बी.एड. कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि की दृष्टि से, इन छात्रों को शिक्षक के रूप में सफल होने के लिए विभिन्न कौशल और ज्ञान की आवश्यकता होती है।

वर्तमान शताब्दी को ज्ञान एवं तकनीकी की शताब्दी कहा गया है। क्योंकि ज्ञान एवं तकनीकी के विकास के आधार ही कोई राष्ट्र अपने को विकसित कर सकता है। भारत सरकार द्वारा विज्ञान नीति प्रस्ताव में कहा गया हे कि ''राष्ट्र की वैभवता एवं समृद्धि औद्योगीकरण के द्वारा मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के समुचित उपयोग पर निर्भर करती है। इसके उपयोग के लिए विज्ञान की शिक्षा एवं तकनीकी कौशलों का प्रशिक्षण आवश्यक है। देश की सम्पन्नता उसके नागरिकों की विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा पर आधारित होती है। वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति वाले राष्ट्र अग्रहणी राष्ट्रों की श्रेणी में रखे जाते है। यदि देखा जाय तो वर्तमान में भी मानव का विकास विज्ञान व तकनीकी के अभाव में सम्भव नहीं है। चाहें व्यक्तिगत विकास हो या सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक ही क्यों न हो वर्तमान परिपेक्ष्य में राष्ट्र की प्रगति शिक्षित, सुयोग्य नागरिकों पर निर्भर है। इसके लिए व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में विकसित करने एवं ज्ञान की आवश्यकता हैं। स्वामी विवेकानन्द ने भी मनुष्य की शिक्षा को ऐसे ज्ञान एवं कौशल के रूप में स्वीकार किया है, जो मनुष्य के भौतिक एवं अध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए आवश्यक है।

विद्यार्थियों में ऊर्जा की तीव्रता के कारण उनका विविधि पक्षों में समायोजन नहीं हो पाता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था की व्यवहारगत कमी उसके व्यवसाय चयन में सहयोग नहीं कर पाता है। जिसके कारण असमायोजित होने लगता है। प्रायः उच्च शिक्षा स्तर पर बालक का प्रवेश 14 वर्ष के बाद होता हे। इस स्तर पर बालक एवं बालिकाओं में अनेक सांवेगिक उठा-पटक होती है। जो बालक इन संवेगों पर नियंत्रण कर लेता है वह अपने को समाज या कक्षाओं में समायोजित कर लेता है तथा उसका शैक्षिक उपलब्धि भी धनात्मक प्रगति की तरफ जाती है। प्रायः यह माना जाता है कि जिस बालक की बुद्विलब्धि अच्छी होती है, वह जीवन में अत्यधिक सफल होता है। परन्तु शोधों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि बुद्धिलब्धि के साथ-साथ सांवेगिक लब्धि की विकसित होनी चाहिए।

अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह बालकों को ऐसी शिक्षा दे जिसके द्वारा बालक में क्रियात्मकता का विकास हो तथा वह कक्षा, समाज तथा विभिन्न परिस्थितियों में अपने को समायोजित कर ले। एक अच्छा नागरिक बने तथा वह सभी के प्रति एक अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने में सफल हो। समायोजन की क्रियाविधि व्यक्ति के विकास की प्रत्येक अवस्था में विद्यमान रहती है। प्रत्येक समाज के अपने नियम, रीति-रिवाज, कायदे कानून, सिद्धान्त एवं मान्यताएं होती है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आकांक्षाएं, रूचि, एवं अभिवृत्ति होती है। इन दोनों के बीच सन्तुलन बनाये रखने के लिए उचित समयोजन की आवश्यकता होती है। समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके द्वारा बालक-बालिकाएं अपने एवं अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करते हैं। यह परिवर्तन तभी सम्भव है जब उनको ठीक ढंग से शिक्षा दी जाय बालक एवं बालिकाओं दोनों को एक समान शिक्षा दी जाय एवं अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाये।

अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः यह कहा जाता है कि व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण ही संवेगात्मक, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में भी भिन्नता पायी जाती है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में अन्तर होता या नही इसी दृष्टि से इस अन्तर को ज्ञात करने की दृष्टि से यह भी सही कहा गया है जिसमें कौशलों को विकसित करने की बात की गयी है ताकि शिक्षा प्रणाली एवं ज्ञान के ढॉचें में योजनाबद्ध परिवर्तन लाया जा सके। इस कड़ी में शोधकर्ता ने यह देखने का प्रयास किया है कि क्या जहाँ एक तरफ महिलाओं को गृहणी का दर्जा दिये जाने के कारण बाह्य समाज में छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर तो नहीं है। क्या ये दोनों चर एक दूसरे को प्रभावित करते है या नही? यदि प्रभावित करते है तो किस प्रकार प्रभावित करते है? अतः शोधकर्ता को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की जीविका वरीयता के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अध्ययन की आवश्यकता हुई।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बी०एड० कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

समय एवं साधनों की सीमितता के कारण इस शोध की सीमाएं इस प्रकार है-

1. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल दरभंगा शहर के बी०एड० विद्यार्थियों को लिया गया है।
2. समय की अति अल्पता के कारण केवल 100 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में रखा गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में बी०एड० कक्षा के विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का सांख्किीय विश्लेषण किया गया। दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध मात्रा ज्ञात करने के लिए कार्ल पिर्यसन के प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अन्तर को देखने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। जिसके परिणामों की व्याख्या इस प्रकार है-

तालिका सं०-1: बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	मानक त्रुटि	टी मान
छात्र	50	1056.13	103.79	13.73	19.85	0.68
छात्राएँ	50	1042.40	102.69			

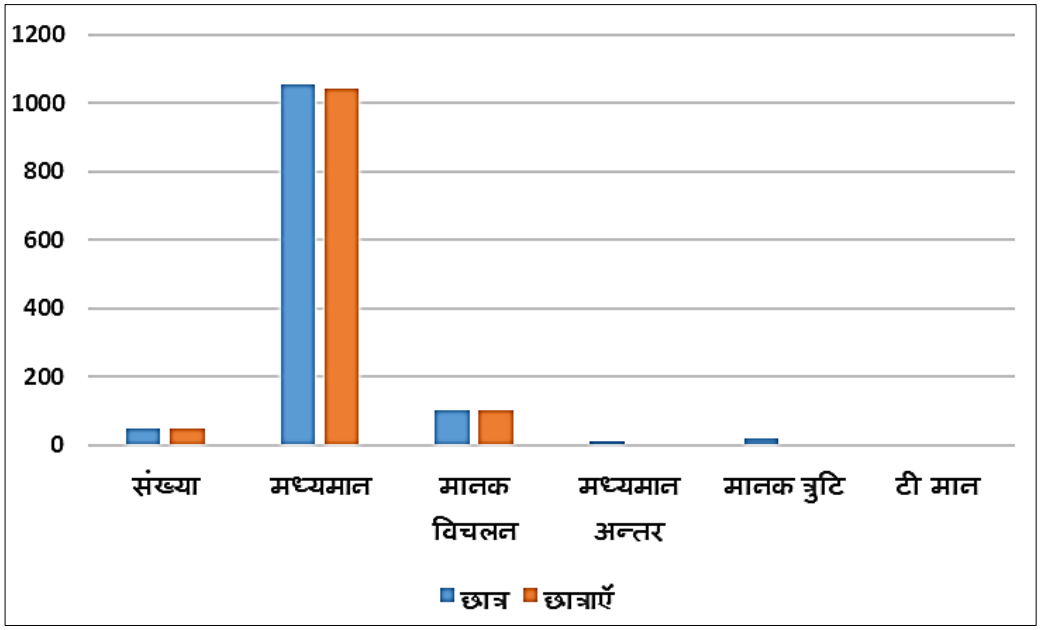

तालिका सं० 1 का अवलोकन करने पर यह प्राप्त हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 1056.13 तथा 1042.40 है, मानक विचलन क्रमशः 103.79 एवं 102.69 है। मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करने के लिए टी0 मूल्य की गणनी की गयी, जो कि 0.68 प्राप्त हुआ। 0.05 विश्वास स्तर पर असार्थक है। अतः परिकल्पना जो कि बी0एड0 कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा, बनायी गयी थी, स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्रा एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं०-2: बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	मानक त्रुटि	टी मान
छात्र	50	176.35	20.23	4.10	5.29	0.77
छात्राएँ	50	172.25	2			

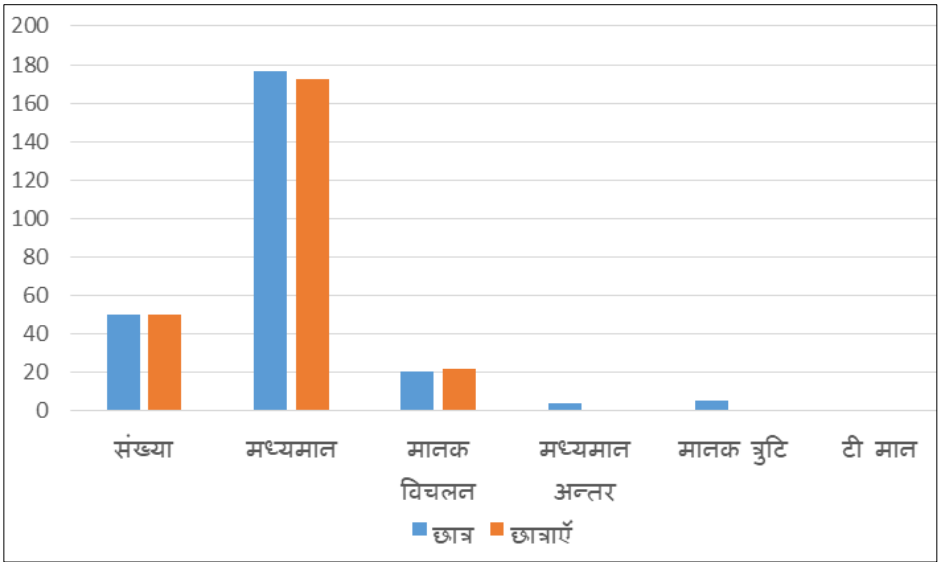

तालिका सं० 2 के निरीक्षण से यह प्राप्त हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 176.35 एवं 172.25 तथा मानक विचलन क्रमशः 20.23 एवं 22.18 है तथा टी०मूल्य 0.77 है परिकल्पना जो कि बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा, बनायी गयी थी स्वीकृत होती है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं०-3: बी०एड० कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता में सकारात्मक संबंध

प्रयुक्त चर	संख्या	सहसंबंध गुणांक	सहसंबंध की शाब्दिक व्याख्या
शैक्षणिक उपलब्धि	100	+.87	उच्च धनात्मक सहसंबंध
समायोजन	100		

तालिका सं० 3 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि समायोजन एक दूसरे से सकारात्मक सह सम्बन्ध रखते है। दोनों चरों में सह सम्बन्ध की मात्रा +.87 दर्ज की गयी जो कि इन दोनों चरों में उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध को दर्शाता है अर्थात् जिस विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होगी उसका समायोजन भी अच्छा होगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि- बी०एड० कक्षा के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। बी०एड० कक्षा के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। तथा बी0एड0 कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। अतः प्रस्तुत परिणाम पुष्टि करता है। उपयुक्त विश्लेषणात्मक अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि बी०एड० कथा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं समायोजन दोनों के मध्य सकारात्मक संबंध है।

संदर्भ :

1. सिंह, अमित 2004 "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"।
2. सिंह, पल्लवी 2011, "माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण संस्थाओं तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"।
3. प्रो० गुप्ता ए०के० एवं सिंह विजयपाल 2007 "सांख्यिकीय के सिद्धान्त", विशाल प्रकाशन मन्दिर मेरठ।
4. Yadav SK, Simbul. Teacher Education in India. A Weekly Journal of higher education association of India; c2006.
5. गुप्ता एस०पी० 2012 ''अनुसंधान संदर्शिका इलाहाबाद", शारदा पुस्तक भवन।